INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 4 | MAY - 2022

आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना और हिंदीकी भूमिका

डॉ. अमित कुमार पटेल
सहायक प्राध्यापक, श्री राम कॉलेज सारागांव रायपुर (छ.ग.)

भूमिका (Introduction):

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 2020 में "आत्मनिर्भर भारत" अभियान की शुरुआत की गई थी। इसका उद्देश्य भारत को आर्थिक, सामाजिक, तकनीकी और सांस्कृतिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना है। यह अभियान केवल आर्थिक सुधारों का ही नहीं, बल्कि एक सशक्त राष्ट्र निर्माण का भी प्रतीक है।

इस अभियान में जहां नवाचार, मेक इन इंडिया, स्टार्टअप्स, स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देना शामिल है, वहीं भाषा का भी महत्वपूर्ण स्थान है। विशेषकर **हिंदी** जैसी व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा, आत्मनिर्भरता की दिशा में जन-जागृति और समावेशन का एक सशक्त माध्यम बन सकती है।

आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना के मुख्य स्तंभ:

1. **आर्थिक आत्मनिर्भरता** – देश में उत्पादन बढ़ाना, विदेशी आयात पर निर्भरता घटाना।
2. **तकनीकी विकास** – स्वदेशी तकनीकों और अनुसंधान को बढ़ावा देना।
3. **सांस्कृतिक गौरव** – भारतीय परंपराओं, हस्तशिल्प और कलाओं का पुनरुत्थान।
4. **शिक्षा और कौशल विकास** – नई शिक्षा नीति के माध्यम से युवाओं को सक्षम बनाना।
5. **स्थानीय से वैश्विक** – 'लोकल फॉर वोकल' और फिर 'वोकल फॉर लोकल' के नारे के माध्यम से।

1. स्वदेशी उत्पादन को बढ़ावा

आत्मनिर्भर भारत अभियान का प्रमुख उद्देश्य स्वदेशी उत्पादन को बढ़ावा देना है। इससे आयात पर निर्भरता कम होगी और घरेलू उद्योगों को प्रोत्साहन मिलेगा।

2. MSME क्षेत्र का सशक्तिकरण

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSME) को वित्तीय सहायता, तकनीकी सहायता और बाजार पहुंच प्रदान की जा रही है, ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें।

3. नवाचार और उद्यमिता

नई तकनीकों, स्टार्टअप्स और व्यवसायिक विचारों को समर्थन देने के लिए योजनाएँ बनाई जा रही हैं, जिससे नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा मिले।

4. सार्वजनिक अवसंरचना में निवेश

सड़कें, रेलवे, बंदरगाहों आदि में निवेश किया जा रहा है, जो आर्थिक विकास और वस्तुओं की आपूर्ति श्रृंखला को बेहतर बनाता है।

5. कृषि और ग्रामीण विकास

कृषि क्षेत्र और ग्रामीण विकास पर भी ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। किसानों को प्रौद्योगिकी, संसाधन और वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है, जिससे कृषि उत्पादकता बढ़ाई जा रही है।

आत्मनिर्भर भारत में हिंदी की भूमिका:

1. **जनसंचार का माध्यम:**
   हिंदी देश की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। आत्मनिर्भरता के संदेश, सरकारी योजनाओं और जागरूकता अभियानों को हिंदी के माध्यम से आमजन तक पहुँचाना सरल और प्रभावी है।
2. **शिक्षा और कौशल विकास में सहायता:**
   यदि तकनीकी शिक्षा और प्रशिक्षण सामग्री हिंदी में उपलब्ध हो, तो ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों के छात्र भी नई तकनीकों से जुड़ सकेंगे।
3. **उद्यमिता को प्रोत्साहन:**
   छोटे उद्यमियों, हस्तशिल्पकारों और स्थानीय व्यापारियों के लिए हिंदी में व्यापारिक जानकारी, प्रशिक्षण और सहायता उपलब्ध कराना, उनके आत्मनिर्भर बनने में मदद करेगा।
4. **सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता:**
   हिंदी साहित्य, लोकगीत, नाटक, सिनेमा आदि के माध्यम से सांस्कृतिक आत्मविश्वास को बल मिलता है, जो आत्मनिर्भरता की भावना को प्रबल करता है।
5. **डिजिटल इंडिया में हिंदी की भूमिका:**
   डिजिटल माध्यमों में हिंदी की उपस्थिति बढ़ने से आम जनता भी सरकारी सेवाओं, बैंकिंग, हेल्थकेयर आदि तक आसानी से पहुँच पा रही है।

1. राष्ट्रीय एकता और पहचान

हिंदी भारत की राजभाषा है और यह राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करती है। आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को जन-जन तक पहुँचाने में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका है। **हिन्दी की भूमिका राष्ट्र की पहचान में**

1. **सांस्कृतिक एकता का प्रतीक:**
   हिन्दी ने भारतीय संस्कृति, साहित्य, और मूल्यों को पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित और संप्रेषित करने का कार्य किया है। रामचरितमानस, प्रेमचंद की कहानियाँ, और कबीर के दोहे जैसे साहित्यिक रचनाएँ भारतीय आत्मा की अभिव्यक्ति हैं।
2. **राष्ट्रभाषा के रूप में एकता का सूत्र:**
   यद्यपि भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं, फिर भी हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसे अधिकांश लोग समझते और बोलते हैं। यह भाषा उत्तर भारत की तो मातृभाषा है ही, दक्षिण और पूर्व में भी यह *संपर्क भाषा* (link language) के रूप में काम करती है।
3. **लोकतांत्रिक व्यवस्था में सहभागिता:**
   चुनाव प्रचार, सरकारी नीतियाँ, और संविधान की धारा 343 के अनुसार हिन्दी का प्रयोग प्रशासनिक कार्यों में किया जाना यह दर्शाता है कि हिन्दी जनसंचार और लोकतंत्र में सहभागिता का माध्यम बन चुकी है।
4. **मीडिया और सिनेमा में योगदान:**
   हिन्दी फिल्मों, समाचार चैनलों और सोशल मीडिया ने हिन्दी को जन-जन तक पहुँचाया है। इससे हिन्दी न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी भारतीय पहचान के रूप में प्रतिष्ठित हुई है।
5. **आर्थिक और वैश्विक मंच पर उभरती हिन्दी:**
   डिजिटल युग में हिन्दी का इंटरनेट पर तेजी से फैलाव हुआ है। यह वैश्विक कंपनियों को भारतीय बाजार से जोड़ने का माध्यम भी बन रही है।

2. शिक्षा और कौशल विकास

हिंदी में शिक्षा और प्रशिक्षण सामग्री उपलब्ध कराने से अधिक से अधिक लोग आत्मनिर्भरता की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं। भारत में शिक्षा और कौशल विकास दोनों ही राष्ट्रीय प्रगति के मुख्य स्तंभ हैं। जब तक शिक्षा और कौशल आम जन तक उनकी अपनी भाषा में नहीं पहुँचते, तब तक उनका पूर्ण विकास संभव नहीं है। हिंदी, जो भारत की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है, इस दिशा में एक सशक्त माध्यम बन सकती है।

1. शिक्षा में हिंदी की भूमिका

1. **सुलभ माध्यम**: हिंदी, करोड़ों भारतीयों की मातृभाषा या संपर्क भाषा है। जब शिक्षा मातृभाषा में दी जाती है, तो सीखने की प्रक्रिया सरल और प्रभावी हो जाती है।
2. **राष्ट्रीय एकता**: हिंदी के माध्यम से एक साझा शैक्षणिक ढांचा तैयार किया जा सकता है जो विभिन्न क्षेत्रों को जोड़ता है।
3. **नई शिक्षा नीति (NEP 2020)**: इस नीति में मातृभाषा में शिक्षा पर ज़ोर दिया गया है, जिससे हिंदी की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण हो गई है।
4. **शोध और लेखन**: उच्च शिक्षा में हिंदी को बढ़ावा देने से भारतीय दृष्टिकोण और स्थानीय ज्ञान को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया जा सकता है।

2. कौशल विकास में हिंदी की भूमिका

1. **प्रशिक्षण की सहजता**: तकनीकी और व्यावसायिक प्रशिक्षण हिंदी में उपलब्ध होने से ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों के युवाओं को प्रशिक्षित करना आसान होता है।
2. **रोज़गार के अवसर**: हिंदी भाषा में प्रशिक्षण पाने वाले युवा छोटे व मझोले उद्योगों में आसानी से कार्य कर सकते हैं, जहाँ अंग्रेज़ी की आवश्यकता कम होती है।
3. **ई-लर्निंग और डिजिटल प्लेटफॉर्म**: हिंदी में ऑनलाइन कोर्स और सामग्री उपलब्ध कराकर डिजिटल डिवाइड को कम किया जा सकता है।
4. **स्थानीय उद्यमिता का विकास**: हिंदी में व्यापार और उद्यमिता से जुड़े कौशल सिखाकर स्थानीय स्तर पर स्वरोज़गार को बढ़ावा दिया जा सकता है।

3. मीडिया और प्रचार-प्रसार

हिंदी मीडिया, जैसे समाचार पत्र, रेडियो, टीवी चैनल्स और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स, आत्मनिर्भर भारत अभियान के संदेश को व्यापक रूप से प्रसारित कर रहे हैं।

4. साहित्य और सांस्कृतिक योगदान

हिंदी साहित्य और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से आत्मनिर्भरता के महत्व को समाज में जागरूक किया जा रहा है। हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारत की आत्मा है। यह न केवल संप्रेषण का माध्यम है, बल्कि भारत की सांस्कृतिक विविधता, परंपराओं और मूल्यों को जोड़ने वाली एक सशक्त कड़ी भी है। साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में हिंदी ने अमूल्य योगदान दिया है, जिसने देश की सामाजिक चेतना को जगाया और राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया।

हिंदी का साहित्यिक योगदान

1. **प्राचीन काल में** –
   हिंदी साहित्य की जड़ें प्राचीन कवियों जैसे *सरहपा*, *गोरखनाथ* और *कबीर* तक जाती हैं, जिन्होंने समाज में व्याप्त अंधविश्वास, पाखंड और सामाजिक विषमता के विरुद्ध अपनी वाणी से चेतना फैलाई।
2. **भक्तिकाल (14वीं से 17वीं सदी)** –
   यह काल हिंदी साहित्य का *स्वर्ण युग* माना जाता है। *तुलसीदास* (रामचरितमानस), *सूरदास* (सूरसागर), *मीरा* और *कबीर* जैसे संत कवियों ने भक्ति के माध्यम से जनता को जोड़ा और धर्म व भक्ति को सरल भाषा में जन-जन तक पहुँचाया।
3. **रीतिकाल (17वीं–18वीं सदी)** –
   इस काल में *रस*, *श्रृंगार* और *काव्य सौंदर्य* को महत्व मिला। *भूषण*, *केशवदास* और *बिहारी* जैसे कवियों ने राजाओं और वीरों की वीरता को साहित्य के माध्यम से अमर किया।
4. **आधुनिक काल (19वीं सदी से अब तक)** –

भारतेंदु हरिश्चंद्र को हिंदी का "*जनक*" कहा जाता है। उनके बाद *प्रेमचंद* ने अपनी यथार्थवादी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया।

– *जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत* और *निराला* जैसे छायावादी कवियों ने हिंदी काव्य को भावनाओं की ऊँचाई तक पहुँचाया।

– *धर्मवीर भारती, नागार्जुन, हरिशंकर परसाई, रामधारी सिंह दिनकर* जैसे लेखकों ने सामाजिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक विषयों पर रचनाएँ लिखीं।

हिंदी का सांस्कृतिक योगदान

1. **लोक संस्कृति और परंपराएँ** –
   हिंदी में लोकगीत, कहावतें, कथाएँ और लोक नाट्य (जैसे *नौटंकी, स्वांग, रामलीला*) के माध्यम से समाज की परंपराएँ जीवंत रहती हैं।
2. **एकता का सूत्र** –
   भारत की विविध भाषाओं और संस्कृतियों के बीच हिंदी ने एक संपर्क भाषा के रूप में एकता की भावना को सशक्त किया है।
3. **फिल्म और मीडिया में हिंदी** –
   हिंदी फिल्म उद्योग (बॉलीवुड) ने हिंदी को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई है। रेडियो, टीवी और समाचार पत्रों के माध्यम से भी हिंदी संस्कृति और साहित्य को जन-जन तक पहुँचाया गया है।
4. **राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान** –
   हिंदी ने स्वतंत्रता संग्राम के समय देश को एकता के सूत्र में बाँधने में अहम भूमिका निभाई। *भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन* में हिंदी कविताओं और लेखों ने लोगों में देशभक्ति की भावना को जगाया।

हिंदी भाषा ने न केवल साहित्य को समृद्ध किया है, बल्कि भारतीय संस्कृति को जीवंत और प्रगतिशील बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज के युग में आवश्यकता है कि हम हिंदी की इस विरासत को आगे बढ़ाएँ, उसके साहित्य और सांस्कृतिक मूल्यों को नई पीढ़ी तक पहुँचाएँ।

आत्मनिर्भर भारत के लाभ

- **आर्थिक सशक्तिकरण**: स्वदेशी उत्पादन और छोटे उद्यमों को प्रोत्साहन देने से भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है।
- **रोजगार के अवसर**: स्वदेशी उद्योगों और MSME के विकास से रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होते हैं।
- **तकनीकी आत्मनिर्भरता**: नई तकनीकों और नवाचारों के माध्यम से भारत तकनीकी दृष्टिकोण से आत्मनिर्भर बन सकता है।
- **गुणवत्ता और प्रतिस्पर्धा**: स्वदेशी उद्योगों के प्रोत्साहन से उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार होता है और प्रतिस्पर्धा बढ़ती है।

- **सामाजिक समावेश**: अभियान का उद्देश्य सभी वर्गों और क्षेत्रों को साथ लेकर चलना है, जिससे सामाजिक समावेश और संतुलन सुनिश्चित होता है।

चुनौतियाँ और समाधान

1. वित्तीय बाधाएँ

छोटे और मध्यम उद्यमों के लिए वित्तीय सहायता की कमी एक बड़ी चुनौती हो सकती है। इसे हल करने के लिए सरकारी योजनाओं और बैंकों के सहयोग से वित्तीय सहायता बढ़ाई जा सकती है।

2. प्रशिक्षण और कौशल विकास

स्वदेशी उद्योगों को उच्च गुणवत्ता और तकनीकी दक्षता के लिए प्रशिक्षित श्रमिकों की आवश्यकता होती है। इसके लिए कौशल विकास कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

3. प्रौद्योगिकी की कमी

स्वदेशी उद्योगों को आधुनिक तकनीकों की आवश्यकता होती है। सरकार को प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और नवाचार को प्रोत्साहित करना चाहिए।

4. बाजार पहुँच

छोटे उद्योगों के लिए बाजार पहुँच एक चुनौती हो सकती है। इसके लिए ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म और निर्यात प्रोत्साहन योजनाओं को अपनाया जा सकता है।

निष्कर्ष

आत्मनिर्भर भारत अभियान एक महत्वाकांक्षी योजना है जिसका उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाना है। यह अभियान न केवल आर्थिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है बल्कि सामाजिक और तकनीकी दृष्टिकोण से भी क्रांतिकारी है। हालांकि कई चुनौतियाँ हैं, लेकिन सही नीतियों और रणनीतियों के माध्यम से भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में यह अभियान महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकता है। "आत्मनिर्भर भारत" की संकल्पना केवल एक आर्थिक दृष्टिकोण नहीं है, यह एक समग्र राष्ट्र निर्माण की सोच है जिसमें भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। हिंदी न केवल जनमानस की भाषा है, बल्कि यह भारत की आत्मा का प्रतिनिधित्व करती है। यदि आत्मनिर्भर भारत का सपना साकार करना है, तो हिंदी को उसके उचित स्थान पर स्थापित करना अनिवार्य है।

सन्दर्भ ग्रंथ :–

1. हिन्दी भाषा का अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ , डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. भारत और आत्मनिर्भर भारत, हिन्दीकुंज (डॉ. ज्योत्सना शर्मा)
3. आत्मनिर्भर भारत और चुनौतियॉ, गिरीष चन्द्र पाण्डे
4. भारतीयता की पहचान, मनोज कुमार राय
5. आत्मनिर्भर भारत और रोजगार के अवसर, डॉ. एम.एल. सोनी एवं नागेन्द्र सिंह यादव
6. https://hi.wikipedia.org › wiki
7. https://www.prabhasakshi.com/literaturearticles/hindi-is-the-strong-base-of-self